SHRI BAIJNATH MAHARAJ

Shri Baijnath Maharaj is the Peethadheeshwar of the Shri Nathji Maharaj Ka Ashram, Laxmangarh, Sikar, Rajasthan.

2. Born on 5th March, 1935 in a Brahmin family of Panlawa, a village near Laxmangarh. Shri Baijnath at the age of 4, came into contact with Shri Shraddhanathji Maharaj, a saint of the same village and remained in his guidance until his demise in 1985. As a student, he was very brilliant and obtained the degree of M.A. in English literature and Hindi from the University of Rajasthan, Jaipur. He worked for 25 years at Gyan Bharati Vidyapeeth, Kothyari as Principal. During his tenure the school became widely popular for the character building of students.

3. In 1985, at his guru Shri Shraddhanathji Maharaj's behest, Shri Baijnathji left the school and came to the Nathji Maharaj ka Ashram, Laxmangarh, where he was duly initiated into Nath panth and declared his heir at the Ashram. After passing away of his guru, Shri Baijnath further developed the Ashram. He built several other rooms and a library of religious books. He replaced the hut, in which his guru used to live into Shraddha Smriti Mandir where his belongings are placed. He wrote several books and got them published. He also established a branch of the Ashram at Mount Abu, where activities like meditation, bhajan are conducted. At Ashram, many programs are organized throughout the year, among which Shraddhanathji's Barsodi (Nirwan Day), Shivratri, Gurupurnima, Diwali, New Year, Holi, Navratri, Ramnawami, Hanuman Jayanti etc. are prominent. He built Shraddha Sanskrit Vidyapeeth where students get Vedic knowledge besides usual school subjects. Recently he has established Shri Shraddha Yoga evam Darshan Shikshan Sansthan, where trained teachers prepare the students for diploma in yoga. This institute is recognized by Shri Ramanand Sanskrit University, Jaipur.

4. In about 90 years of his life, Shri Baijnath has worked hard towards service of the country, religion, humanity, education, character building etc. but has never tried to popularise himself or seek praise.

श्री बैजनाथ महाराज

श्री बैजनाथ महाराज लक्ष्मणगढ, सीकर, राजस्थान में श्री नाथजी महाराज का आश्रम के पीठाधीश्वर हैं।

2. 5 मार्च, 1935 को लक्ष्मणगढ़ के निकट पनलावा गांव में एक ब्राह्मण परिवार में जन्मे, श्री बैजनाथ चार वर्ष की आयु में उसी गांव के एक संत श्री श्रद्धानाथजी महाराज के संपर्क में आए और 1985 में उनके निधन तक उनके मार्गदर्शन में रहे। एक छात्र के रूप में, वह बहुत प्रतिभाशाली थे और उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से अंग्रेजी साहित्य और हिंदी में एमए की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 25 साल तक ज्ञान भारती विद्यापीठ, कोठियारी में प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। उनके कार्यकाल के दौरान यह विद्यालय छात्रों के चरित्र निर्माण के लिए काफी लोकप्रिय हुआ।

3. 1985 में अपने गुरु श्री श्रद्धानाथजी महाराज के आदेश पर श्री बैजनाथजी ने स्कूल छोड़ दिया और नाथजी महाराज का आश्रम, लक्ष्मणगढ़ आ गए, जहां उन्हें नाथ में विधिवत दीक्षा दी गई और आश्रम में उनका उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया। अपने गुरु के निधन के बाद श्री बैजनाथ ने आश्रम का और विकास किया। उन्होंने कई अन्य कमरे और धार्मिक पुस्तकों का पुस्तकालय बनवाया। उन्होंने उस झोपड़ी की जगह, जिसमें उनके गुरु रहते थे, श्रद्धा स्मृति मंदिर बनवाया जहाँ उनकी वस्तुएं रखी हुई हैं। उन्होंने कई किताबें लिखीं और उन्हें प्रकाशित करवाया। उन्होंने माउंट आबू में आश्रम की एक शाखा भी स्थापित की, जहाँ ध्यान, भजन जैसी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। आश्रम में सालभर कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें श्रद्धानाथजी का बरसोडी (निर्वाण दिवस), शिवरात्रि, गुरुपूर्णिमा, दिवाली, नववर्ष, होली, नवरात्रि, रामनवमी, हनुमान जयंती आदि प्रमुख हैं। उन्होंने श्रद्धा संस्कृत विद्यापीठ का निर्माण किया जहाँ छात्रों को सामान्य स्कूली विषयों के अलावा वैदिक ज्ञान भी दिया जाता है। हाल में उन्होंने श्री श्रद्धा योग एवं दर्शन शिक्षण संस्थान स्थापित किया है, जहाँ प्रशिक्षित शिक्षक छात्रों को योग में डिप्लोमा के लिए तैयार करते हैं। यह संस्थान श्री रामानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त है।

4. अपने जीवन के लगभग 90 वर्षों में, श्री. बैजनाथ ने देश सेवा, धर्म, मानवता, शिक्षा, चरित्र निर्माण आदि के लिए कड़ी मेहनत की है, लेकिन कभी अपना प्रचार करने या प्रशंसा पाने का प्रयास नहीं किया।